'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 2 4 अप्रैल, 2019 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'त्यौहार आत्म चिंतन के उत्प्रेरक'

त्यौहार आत्म चिंतन के प्रेरक होते हैं। उनमें से एक त्यौहार 'होली' भी है। आज के दिन हम चिंतन करें कि हमने क्या जला दिया? किस होली का हमने दहन किया है? होलिका दुष्ट प्रवृत्ति की थी। वरदान के बावजूद वह जल गई और सद्प्रवृत्ति का प्रहलाद बच गया। परमेश्वर स्वयं सद्प्रवृत्तियों की रक्षा करते हैं। यह बात सुनते हुए हमे हजारों वर्ष हो गए। संघ में आते हुए भी हमें अनेक वर्ष हो गए, चिंतन करें कि इस दौरान हमने अपनी कितनी दुष्प्रवृतियों को जलाया? क्या हम यह सावधानी रखते हैं कि मुझे देखकर मेरे एवं पड़ौसी के बच्चे कितने प्रभावित होते हैं? पूज्य तनसिंह जी ने अपनी डायरी में एक स्थान पर लिखा कि संघ पवित्र संस्था है और इस पवित्र संस्था में मैं बुरा हो गया हूं। पूज्य तनसिंह जी ने स्वीकार किया हमें प्रेरणा देने के लिए लेकिन विचार करें हमारी आंख खुली है या बंद? जब हम अपने आचरण पर ध्यान नहीं देते है तो मार्ग से भटक जाते हैं। इसलिए धैर्यपूर्वक अपने आचरण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रवाहमान रहना पड़ेगा। बाड़मेर में भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम में होली के दिन होलिका दहन से पहले उपस्थित स्वजनों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम महसूस करते हैं कि परिवार में, समाज में हमारा कोई कहना नहीं मानता है तो पूज्य तनसिंह जी ने एक जगह लिखा है कि मेरा मंत्र बल कमजोर हो गया है इसीलिए लोग मेरा कहना नहीं मानते हैं। वे हर समस्या का स्वयं की ओर से कारण पहले ढूंढ़ते थे। वे आगे लिखते हैं कि आवश्यकता है तप करूं, संयम रखूं, उस तप की अग्नि में स्वयं के दोषों को जलाकर अपने मंत्र बल को बढ़ाऊं। इसलिए हम अपने आप पर आक्रोश करें, क्रोध करें। उसे दूसरों पर नहीं निकालें बल्कि उसमें अपनी दुष्प्रवृत्ति को जलाएं और अच्छे बनें। यही होली के त्यौहार का संदेश है। बाड़मेर शहर में निवासरत स्वयंसेवक एवं सहयोगी परिवार सहित होली मनाने आलोक आश्रम पहुंचे। वहीं भोजन किया एवं सबने मिलकर 'बागबां' फिल्म देखी जो पारिवारिक मूल्यों को पुष्ट करती है। प्रातःकाल स्वयंसेवकों ने माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में होली खेली एवं अपने जीवन में खुशियों एवं सद्मार्ग पर बढ़ने के रंगों को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

बाड़मेर के अलावा केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति', सभी क्षेत्रीय कार्यालयों एवं शाखाओं में होली स्नेहमिलन रखे गए। केन्द्रीय कार्यालय में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, दीपसिंह बेण्यांकाबास, संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ सहित जयपुर प्रांत के स्वयंसेवकों ने होली मनाई। सूरत एवं मुम्बई की विभिन्न शाखाओं ने अपने-अपने प्रांत में सामूहिक एवं पृथक-पृथक कार्यक्रम रखे। कुछ शाखाओं में होली से एक दो दिन पहले एवं कुछ ने बाद में भी कार्यक्रम रखे।

श्री आयुवानसिंह स्मृति समारोह एवं पुस्तक मेला

श्री आयुवानसिंह स्मृति संस्थान के तत्वावधान में 17 मार्च को राजपूत सभा भवन जयपुर में श्री आयुवानसिंह स्मृति समारोह एवं पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

समारोह को बाबा हरदेवसिंह (सेवानिवृत आई.ए.एस.), हुकमसिंह राणा (सेवानिवृत आई.ए.एस.), लक्ष्मणसिंह राठौड़ (विख्यात मौसम वैज्ञानिक) एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक देवीसिंह महार ने संबोधित किया। समारोह की अध्यक्षता प्रहलादसिंह सिकरवार ने की। वक्ताओं ने श्रद्धेय आयुवानसिंह जी के संघर्षमयी जीवन के बारे में बताते हुए उन्हें प्रसिद्ध लेखक, चिंतक, राजनेता एवं कुशल संगठक बताया। इस अवसर पर आयोजित पुस्तक मेले में धर्म, इतिहास, संस्कृति आदि विषयों की लगभग एक हजार प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध थीं।

सूरतसिंह कालवा नहीं रहे

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सूरतसिंह कालवा का विगत 22 मार्च को देहावसान हो गया। श्री कालवा मई 1948 में कुचामन में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर से संघ के संपर्क में आए। सार्वजनिक निर्माण विभाग में अभियंता से सेवानिवृत कालवा ने अपने जीवन काल में 35 उ.प्र.शि., 50 मा.प्र.शि., 48 प्रा.प्र.शि. व 21 विशेष शिविर किए। सेवानिवृत्ति के पश्चात स्वास्थ्य अनुकूल रहने तक पूर्णकालिक रूप से संघ में समय दिया। संघ के पाक्षिक समाचार पत्र पथप्रेरक का प्रारम्भ के दिनों में पूरा दायित्व संभाला। आपने अनेक लोगों को अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार के बल पर संघ मार्ग पर आरूढ़ किया। अपने संपर्क में आने वाले व्यक्ति को संघ से जोड़ने के लिए मिलना, पत्र व्यवहार बनाना आपकी विशेषता थी। पाली, अजमेर आदि क्षेत्रों में अपने राजकीय सेवा काल में भी आपने अपनी इस विशेषता के बल पर लोगों को संघ से परिचित करवाया व जोड़ा। परमेश्वर उन्हें चिर शांति प्रदान करें।

औंकारसिंह बाबरा का देहावसान

आजादी के बाद जोधपुर के महाराजा हणवंतसिंह के सचिव के रूप में जोधपुर रियासत के भारत संघ में विलय का मसोदा तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ आई.ए.एस. औंकारसिंह बाबरा का 26 मार्च को 99 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी आप जीवन पर्यन्त सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहे एवं राजपूत एकता नामक सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन करते रहे। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरुष अपने विचारों के संप्रेषण के माध्यम से आमजन तक अपनी बात पहुंचाते हैं। वे अपने समय उपलब्ध सभी साधनों का भरपूर उपयोग कर अपनी विचार सरिता को प्रवाहित करते हैं जिससे हर आम व खास तक वे अपनी बात पहुंचा सकें। पूज्य तनसिंह जी के समय पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखकर विचारवान लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का प्रचलन था। उन्होंने इस प्रचलन का भरपूर उपयोग किया। सन् 1940 में जब वे चौपासनी विद्यालय में पढ़ते थे उसी समय अजमेर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'क्षात्र धर्म' में उनके लेख प्रकाशित होने लगे। 'क्षात्र धर्म' सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया तो जयपुर से 'क्षत्रिय गौरव' पाक्षिक शुरू हुआ। यहां भेजे गए पूज्य तनसिंह जी के लेखों से प्रभावित होकर संपादक मंडल ने उन्हें इस पत्र के युवा स्तम्भ का संपादक बना दिया। वे लगातार इस स्तंभ में लिखते रहे। 1949 में बाड़मेर आने के बाद उन्होंने बाड़मेर में अपनी प्रिंटिंग प्रेस शुरू की। उसमें लगातार सामाजिक लेख प्रकाशित होते थे। यहीं 'संघर्ष' नामक मासिक पत्रिका प्रारंभ की जो उस समय युवाओं में लोकप्रिय हुई। इसके बाद 1960 में उन्होंने 'संघशक्ति' मासिक प्रारम्भ की जो आपातकाल में कुछ वर्षों की राजकीय बाधा के अलावा निरन्तर प्रकाशित हो रही है। संघशक्ति का भी प्रारम्भ में तो स्वयं ने ही संपादन किया, कालांतर में संपादक का दायित्व अन्यों को सौंपा लेकिन काम लगभग पूरा स्वयं ही देखते थे। 'संघशक्ति' में नियमित लेखों के अलावा उनकी अनेक श्रृंखलाएं प्रकाशित हुईं जिनको बाद में पुस्तक का रूप दिया गया। इस प्रकार पूज्य श्री ने विचार संप्रेषण के तत्कालीन माध्यम का पूर्ण उपयोग कर सभी विचारवान लोगों को जोड़ने का काम किया और उनका यह प्रयास ही श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार बना। आज भी संघ उनका अनुसरण करते हुए 'संघशक्ति' मासिक एवं 'पथप्रेरक' पाक्षिक का नियमित प्रकाशन कर रहा है एवं इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में विचार संप्रेषण के अन्य माध्यमों का भी यथायोग्य उपयोग करता है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(3) कोस्ट एण्ड वर्क्स अकाउंटेंट (Cost and Works Accountant) : कोस्ट अकाउंटेंट के रूप में वाणिज्य वर्ग के छात्र एक प्रतिष्ठित कैरियर को अपना सकते हैं। कोस्ट अकाउंटेंट का मुख्य दायित्व बिजनेस गतिविधियों के मूल्य निर्धारण हेतु सूचनाओं के संग्रहण, अध्ययन व नियोजन का होता है। वित्तीय सूचनाओं के विश्लेषण के साथ रिपोर्ट तैयार करने तथा प्रबंधन को मूल्य व राजस्व संबंधी सलाह देने का कार्य भी उन्हें करना होता है। कोस्ट अकाउंटेंट बनने के लिए CMA कोर्स में प्रवेश लेकर उसे उत्तीर्ण करना होता है। CMA (Cost Management Accounting) को पहले ICWA के नाम से जाना जाता था। CMA कोर्स के तीन स्तर हैं :

(i) CMA फाउण्डेशन : इसकी अवधि न्यूनतम आठ माह की होती है। विद्यार्थी 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इस में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्त्ता की न्यूनतम आयु 17 वर्ष होनी चाहिए।

(ii) CMA इण्टरमीडिएट: इसकी अवधि न्यूनतम 10 माह की होती है। बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात इसमें प्रवेश लिया जा सकता है। फाउण्डेशन कोर्स अथवा फाइन आर्ट्स के अतिरिक्त किसी अन्य वर्ग से स्नात्तक करने के बाद भी विद्यार्थी इस कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं।

(iii) CMA फाइनल : इण्टरमीडिएट कोर्स करने के पश्चात् इसमें प्रवेश लिया जा सकता है। इसकी अवधि न्यूनतम 18 माह की होती है।

CMA कोर्स की तीनों स्तर की प्रवेश परीक्षाएं ICAI (Institute of Cost Accountants of India) द्वारा आयोजित की जाती है। ICAI द्वारा यह परीक्षाएं वर्ष में दो बार जून व दिसम्बर माह में आयोजित की जाती हैं।

CMA कोर्स उपलब्ध करवाने वाले कुछ प्रमुख महाविद्यालय निम्नलिखित हैं :

(i) The Institute of Cost Accountunts of India, Bangalore.
(ii) Narsee Monjee Collage of Comerce and Economics, Mumbai.
(iii) Bharathy Educational Centre, Namakkal.
(iv) GC Rao Academy Bangalore.
(v) Knowledge Academy of Research and Education (KARE) Palarivattom, Kerala.

क्रमशः

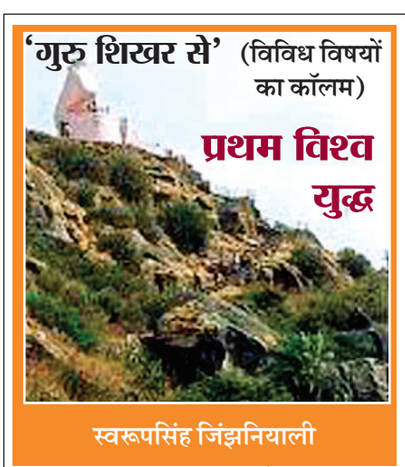

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व 29 जुलाई 1914 से 11 नवम्बर 1918 तक पहला विश्व युद्ध लड़ा गया। यह युद्ध चार वर्ष 3 महीने व 2 सप्ताह चला। 6 करोड़ 82 लाख सैनिकों ने उस युद्ध में भाग लिया। लगभग 85 लाख सैनिक व 1.30 करोड़ नागरिक मारे गए।

आस्ट्रिया हंगरी साम्राज्य के उत्तराधिकारी (राजा) आर्क ड्युक एफ. फार्निनेड और उसकी पत्नी की सर्बिया में हत्या हो गई। इस कारण आस्ट्रिया हंगरी ने सर्बिया पर आक्रमण कर दिया और विश्व युद्ध की शुरुआत हो गई। दोनों देशों के लिए विश्व के कई देश इस युद्ध में एक-दूसरे के लिए जुड़ते गए। इस युद्ध में 30 से ज्यादा देश शामिल हुए। एक तरफ 17 मित्र देश थे जिनमें सर्बिया, ब्रिटेन, जापान, रूस, फ्रांस, इटली अमेरिका आदि तथा दूसरी तरफ सेन्ट्रल पावर देश के रूप में आस्ट्रिय हंगरी, जर्मनी, बुलगेरिया, ओटोमन साम्राज्य (तुर्की) आदि थे। ब्रिटिश साम्राज्य की तरफ से भारत ने मित्र राष्ट्रों की सेना के साथ युद्ध लड़ा। इस त्रासदी के समय दुनिया में कई नए अविष्कार हुए। एक कप चाय जितने टी बैग, पेपर नेपकीन, नर्सो के लिए सैनेटरी टावेल, कपड़ों एवं जूतों में समय की बचत के लिए सैनिकों के लिए जिप (चैन) लगाई गई। बन्दूकों को बनाने में स्टेन लैस स्टील का प्रादुर्भाव हुआ। खून को सुरक्षित रखने के लिए ब्लड बैंक का आविष्कार हुआ। युद्ध में चार बड़े साम्राज्य रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया हंगरी एवं उस्मानिया ढह गए और 9 नए देशों का उदय हुआ। युद्ध समाप्ति के बाद 10 जनवरी 1920 को विश्व शान्ति के लिए 58 देशों ने मिलकर लीग ऑफ नेशन्स नामक संगठन खड़ा किया। हालांकि ये देश 19 वर्ष बाद हुए दूसरे विश्व युद्ध को रोक नहीं पाए। ब्रिटिश साम्राज्य के तहत आने वाले भारत से 11 लाख भारतीय सैनिकों ने इस युद्ध में भाग लिया। जिसमें 50 प्रतिशत सैनिक अविभाजित पंजाब प्रांत से थे। अधिकांश भारतीय सैनिक साक्षर अथवा अनपढ़ थे। 75 हजार भारतीय सैनिक विश्व के कई मोर्चों पर लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। ब्रिटिश सरकार ने 9200 भारतीय सैनिकों को वीरता पदक से नवाजा था। सिक्ख सैनिक युद्ध के मोर्चों पर अग्रिम पंक्ति में अपनी पवित्र धार्मिक पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' को सिर पर रखकर चलते थे। भारतीय ब्रिटिश सरकार ने युद्ध में शहीद हुए 75 हजार भारतीय सैनिकों की याद में दिल्ली में राजस्थान के धोलपुरी पत्थर से बने 'इंडिया गेट' की नींव 1921 में रखी जो 1931 में बनकर तैयार हुआ, इसमें 13300 सैनिकों के नाम उत्कीर्ण है। भारत से युद्ध में प्रयोग होने के लिए 1.73 लाख जानवर भेजे गए थे जिनमें घोड़े, खच्चर, टटू, ऊंट, बैल और दूध देने वाले मवेशी शामिल थे।

भारतीय रजवाड़ों से कई सैनिक अपने शासकों अथवा कमान्डरों के साथ विश्व युद्ध के विभिन्न मोर्चों पर बहादुरी से लड़े जिनमें अधिकांश सैनिक राजपूत वीर योद्धा थे। बीकानेर के महाराजा गंगासिंह अपनी ऊंट सेना का नेतृत्व करने खुद युद्ध के मोर्चो पर तैनात रहे। उनकी 'गंगा रिसाला' ऊंट सेना उस समय विश्व को आकर्षित एवं अचंभित करने वाली दुनियां की पहली ऊंट सेना थी। मारवाड़ की घुड़सवार सेना की बहादुरी का विश्व में कोई सानी नहीं था। 73 वर्ष की अवस्था में भी आकर्षक, ऊर्जावान व सबसे बुजुर्ग परन्तु दिल के युवा महाराज सरप्रताप सिंह का युद्ध के मोर्चो पर नेतृत्व करना योद्धाओं की परम्परा का अनुपम उदाहरण था। उनके साथ उनके दो पुत्र हनुतसिंह एवं सगतसिंह भी मोर्चों पर डटे रहे थे। जोधपुर लांसर का फिलिस्तीन में सर प्रताप के नेतृत्व में बहादुरी से लड़ना अविस्मरणीय था। इजराइल के हाइफा शहर में इस राठौड़ी सेना का वहां की सरकार ने भव्य स्मारक बना रखा है। जोधपुर के राव राजा दलपत सिंह देवली ने इस युद्ध में अदम्य साहस दिखाया था। भारत सरकार के दिल्ली के शहीद स्मारक त्रिमूर्ति टावर में एक मूर्ति मेजर दलपतसिंह की है। सरप्रताप एवं महाराजा गंगासिंह ने शान्ति सम्मेलन पेरिस (फ्रांस) में भारत का प्रतिनिधित्व किया था जिसमें लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की गई। सर प्रताप ने प्रथम विश्व युद्ध में मिले रिवार्ड में और धनराशि मिलाकर जोधपुर में राजपूत स्कूल चौपासनी की स्थापना की। इस संस्था से पढ़कर अनेक राजपूतों ने अपना, समाज का एवं देश का नाम रोशन किया। जयपुर की सेना ने युद्ध के मोर्चों पर बहादुरी से दुश्मनों का सामना किया। मारवाड़ के पोलवा ठिकाने से जयपुर रियासत में जाकर बसे चाम्पावत राठौड़ों के ठिकाने कानोता के ठाकुर जनरल अमरसिंह (तब के कैप्टन) इस प्रथम विश्व युद्ध में यूरोप में विभिन्न मोर्चों पर तैनात रहे। उन्होंने 1890 से लेकर 1940 के समय तक 89 खण्डो में विश्व की सबसे बड़ी दैनिक डायरी लिखी है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन

जयपुर महानगर एवं बीकानेर की जिला स्तरीय बैठक संपन्न

बीकानेर

जयपुर

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के संदेश को धरातल तक पहुंचाने के लिए जिला स्तर पर बैठकों की कड़ी में 16 मार्च को जयपुर एवं 23 मार्च को बीकानेर में बैठक संपन्न हुई। 16 मार्च की सायं श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में जयपुर महानगर के आमंत्रित समाज बंधुओं की बैठक रखी गई। बैठक में संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली एवं सह संयोजक आजादसिंह शिवकर से फाउण्डेशन के गठन की भूमिका, उद्देश्यों, कार्य पद्धति एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्धता आदि की विस्तार से जानकारी दी। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में बैठक में शामिल समाज बंधुओं ने अपने विचार साझा किए। राजवीर सिंह मुंडरू, लोकेन्द्रसिंह चिरनोटिया, श्रवणसिंह बगड़ी, रुपेन्द्र सिंह करीरी, शुभदेशसिंह गिगलाना, अभयराजसिंह मुंडरू, उम्मेदसिंह गरणिया, ऋषिराज सिंह हणतपुर, उदयसिंह तंवर, करमवीरसिंह दिवराला, भूपेन्द्रसिंह मलारना, ओमेन्द्रसिंह चौरू, मुकेशसिंह बोबासर, सज्जनसिंह सराणा, आदित्यसिंह बरवाली आदि ने चर्चा में भागीदारी निभाते हुए कैरियर काउंसलिंग, मौहल्ले वार युवाओं बैठकें, रोजगार की समस्या के उपाय हेतु रोजगार देने वालों और रोजगार चाहने वालों के बीच सेतु बनने, व्यवसाय अनुसार अलग-अलग घटक बनाने, समाज के उद्योगपतियों की बैठक करवाने, श्रम के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत करने, युवाओं की क्षमताओं को जानकर उसी के अनुरूप उनको काम दिए जाने, राजनीति के प्रति उपेक्षा का भाव न रखने, सोशल मीडिया पर सकारात्मक सामग्री प्रसारित करने, अन्य जातियों के साथ संवाद बनाने, सामाजिक भाव वाले युवाओं को पहचानने, राजपूत समाज की नकारात्मक छवि को दूर करने हेतु प्रयास करने आदि विषयों पर बात की। 24 को प्रातः माननीय महावीरसिंह सरवड़ी के सानिध्य में 'संघशक्ति' में लगने वाली साप्ताहिक शाखा में सभी शामिल हुए। शाखा में पूज्य तनसिंह जी की पुस्तक 'गीता और समाज सेवा' के अध्याय 'श्रद्धा और तर्क' पर हुई चर्चा का लाभ लिया।

इसी कड़ी में 23 मार्च की शाम बीकानेर के निकट स्थित काऊ बेल्स फार्म हाउस पर बीकानेर जिले की बैठक रखी गई जिसमें प्रथम सत्र में फाउण्डेशन की भूमिका, उद्देश्य, संघ से संबद्धता आदि के बारे में विस्तार से बताया गया। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में हुई परिचर्चा में सुरेन्द्रसिंह बड़बर, सत्येन्द्रसिंह बामण्या, किशोरसिंह शेखावत, विजयपालसिंह लाडून्दा, लक्ष्मणसिंह राजासर बीकान, लक्ष्मण सिंह नोकड़ा, गोविन्दसिंह स्याणी, डॉ. नरेन्द्रसिंह जालमपुरा, महेन्द्रसिंह, राजेन्द्रसिंह भोजासर, मनोहरसिंह लूणासर, राजेन्द्रसिंह आलसर, गुलाबसिंह आशापुरा, विजयसिंह खारा, आलोकवर्धनसिंह, मदनसिंह चिमाणा, नगसिंह देवका, गजेन्द्रसिंह लूंछ, नवीनसिंह भवाद, सुरेन्द्रसिंह ख्याळी आदि ने भागीदारी निभाई। परिचर्चा में तकनीकी शिक्षा से जुड़े समाज बंधुओं ने इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों से अवगत होने व उनका लाभ लेने की बात कही। सोशल मीडिया के नकारात्मक पक्ष पर चर्चा के साथ साथ इस बात को भी स्वीकारने की बात हुई कि यह विचार संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम बन चुका है इसलिए इसका सदुपयोग करने में अग्रसर होना चाहिए। संवैधानिक साधन अपने आप में बहुत मजबूत है लेकिन जानकारी के अभाव में हम उनका समुचित उपयोग नहीं कर पा रहे। सरकारी योजनाओं की जानकारी आम समाज बंधु तक पहुंचाने में सेतु बनने की भी बात की गई। नियमित संवाद बनाए रखने की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई। नियमित संवाद विपरीत परिणामों के बावजूद सक्रिय बनाए रखता है। व्यवसाय के क्षेत्र में समाज के रुझान को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता जताई गई। बैठक में चर्चा की गई की श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन हर समस्या का स्वयं हल नहीं दे सकता लेकिन समस्या का हल खोजने में सक्षम लोगों को संयोजित कर सकता है और संयोजित प्रयासों से समस्याओं से निपटा जा सकता है। 24 मार्च को प्रातः संघ की शाखा लगाकर बैठक का समापन किया गया। 23 मार्च को ही सीकर के पलसाना की शेखावत धर्मशाला में फाउण्डेशन की तहसील स्तरीय बैठक रखी गई जिसमें पलासाना के आसपास के गांवों के समाज बंधु शामिल हुए। बैठक में जुगराज सिंह जुलियासर, सुरेन्द्रसिंह तंवरा, मूलसिंह बरसिंहपुरा, रतनसिंह छिंछास, अजीतसिंह नूहसिंहपुरी आदि ने फाउण्डेशन की जानकारी दी। जयपुर महानगर की बैठक के उपरान्त श्रवणसिंह बगड़ी, अभयराजसिंह मुंडरू, ओमेन्द्रसिंह चौरू, ऋषिराजसिंह हणतपुर, मालसिंह पांचुडाला, भंवरसिंह पीपासर, विक्रमसिंह सिंघाणा, प्रेमसिंह बनवासा, शुभदेशसिंह गिगलाना व योगेन्द्रसिंह रणसीगांव की दस सदस्यीय टीम को महानगर का काम सौंपा गया। इसी प्रकार बीकानेर जिले की बैठक के बाद नवीनसिंह भवाद, मेघसिंह सेवड़ा, रामसिंह चरकड़ा, सुरेन्द्रसिंह ख्याळी, गजेन्द्रसिंह लूंछ, संग्रामसिंह चलकोई, डॉ. नरेन्द्रसिंह जालमपुरा, राहुलसिंह निराधणु, राजेन्द्रसिंह हासपुर, हणवंतसिंह आशापुरा की दस सदस्यीय टीम का बीकानेर जिले में काम करने के लिए मनोनयन किया गया।

महेसाणा प्रांत में कर्मचारी बैठक

संघ के गुजरात क्षेत्र के महेसाणा प्रांत में महेसाणा स्थित सिविक सेन्टर हॉल में महेसाणा व पाटण जिले के सरकारी एवं अर्द्धसरकारी राजपूत कर्मचारियों की एक बैठक 17 मार्च को अपराह्न 2.00 से 5.00 बजे तक रखी गई। सर्वप्रथम प्रार्थना आदि के बाद आपस में परिचय हुआ एवं परिचय के पश्चात दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने पूज्य तनसिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया। साथ ही एक कर्मचारी किस प्रकार संघ कार्य में सहयोगी हो सकता है इस बारे में बताया। धर्मेन्द्रसिंह आंबली ने कहा कि हम हमारे धर्म, संस्कृति, कर्म और इतिहास को भूल रहे हैं इसीलिए कमजोर हो गए एवं समाज टूटता जा रहा है। हर क्षेत्र में सीमा बांधने वाला समाज आज कहां है यह हमारे लिए विचारणीय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी विचार का प्रकट रूप है। कर्मचारी प्रकोष्ठ का गठन इसी विचार को कर्मचारी वर्ग तक पहुंचा कर उसे सहयोगी बनाने के लिए किया गया है। बैठक में उपस्थित सभी कर्मचारी बंधुओं को दो दलों में विभक्त कर परस्पर चर्चा की गई। अनेक सुझाव आए एवं शंकाओं का समाधान किया गया। सोशल मीडिया के माध्यम से संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने संघ का संदेश देते हुए कहा कि अपने आपको उठाना ही पुरी कौम को उठाना है और यही संघ की प्रक्रिया है। केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची, पुलिस उपाधीक्षक बलदेव सिंह भैंसाणा, इंस्पेक्टर हरपालसिंह धोलेरा ने भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपना संदेश दिया। अंत में अल्पाहार कर कार्यक्रम का विसर्जन हुआ।

संपादकीय

'आईए पुरुषार्थी बनें'

भाषा के दृष्टिकोण से पुरुषार्थ शब्द वैसा ही है जैसा सत्यार्थ है, सेवार्थ है या ज्ञानार्थ है। शब्द गठन के विज्ञान की दृष्टि से यह शब्द 'पुरुष' और 'अर्थ' शब्द की संधि से बना है और इसी प्रकार ऊपर लिखित अन्य शब्दों का गठन हुआ है। ऐसे में जैसे सत्यार्थ का अर्थ सत्य के लिए, सेवार्थ का अर्थ सेवा के लिए एवं ज्ञानार्थ का अर्थ ज्ञान के लिए होता है उसी प्रकार पुरुषार्थ का अर्थ पुरुष के लिए होता है। वे सभी हलचल जो पुरुष के लिए की जाती हैं, पुरुषार्थ कहलाती हैं। तो क्या एक महिला किसी पुरुष के लिए जो हलचल करती है वह पुरुषार्थ कहलाएगा? यदि यही पुरुषार्थ है तब तो पुरुषार्थ महिलाओं के क्षेत्र की बात हो गई, पुरुष का इससे क्या लेना देना? तो वास्तव में यह महिलाओं के ही कार्य क्षेत्र की बात है और पुरुष के लिए ही है लेकिन समझने का विषय है कि जिस महान संस्कृति में यह शब्द प्रयोग में लाया गया है वहां पुरुष और स्त्री किसे माना गया है? यजुर्वेद के श्लोक 'ॐ हिरण्येगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत' में पति किसे कहा गया है? गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका एवं रामचरितमानस में स्थान-स्थान पर किसे पति या पुरुष कह कर पुकारा है? ऋष्यमूक पर्वत्त पर भगवान राम से प्रथम मिलन पर हनुमान के ये उद्गार 'देखि पवनसुत पति अनुकूला' किस पुरुष की ओर इंगित कर रहे हैं? संत कबीर ने स्थान-स्थान पर 'पिया' कहकर किस पुरुष को संबोधित किया है? माता मीरां ने किस पति का वरण किया था? यदि इन सब बातों पर विचार करें तो पुरुष का स्वरूप समझ में आता है। माता मीरां को छोड़ दें तो ये सब हमारी परिभाषा में तो पुरुष ही थे, फिर ये किस पुरुष को पति मान रहे हैं? वास्तव में ये जिसे पुरुष या पति कहकर संबोधित कर रहे हैं वही एक मात्र पुरुष है शेष सभी तो उनकी माया का विस्तार है जो स्त्री स्वरूप है और पुरुषार्थ उन्हीं एक मात्र पुरुष के लिए किए गए कार्यों को या हलचलों का नाम है। इस दृष्टिकोण से पुरुषार्थ पूर्णतः आध्यात्मिक शब्दावली है लेकिन भारतीयता की यह सुंदरता है कि यहां प्रवृत्ति और निवृत्ति अलग-अलग नहीं है। अध्यात्म और संसार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं है, इसलिए यहां प्रवृत्ति ही निवृत्ति की ओर अग्रसर करती है। संसार स्वयं व्यक्ति को अपने भीतर से गुजार कर परमेश्वर की ओर प्रवृत्त करता है और इसी अर्थ में पुरुषार्थ जैसी अवधारणा प्रस्फुटित हुई है। इस प्रकार परमेश्वर के लिए किए जाने वाले कार्य ही पुरुषार्थ हैं। शेष सभी कार्य जिनका लक्ष्य प्रत्यक्ष या परोक्ष में परमेश्वर नहीं होता वे पुरुषार्थ नहीं होते। लेकिन परमेश्वर को तो भारतीयता ने अगम्य माना है, अगोचर माना है ऐसे में हमारे पुरुषार्थ उसके लिए कैसे हों? लेकिन वही भारतीयता कहती है कि वह अगम्य होकर भी अगोचर होकर भी, असंग होकर भी सर्वत्र समाया हुआ है, कण-कण में व्याप्त है, जो कुछ है उसी की सत्ता है और उसी सत्ता को स्वीकार कर उसके निमित्त हमारी समस्त हलचल हों, यही पुरुषार्थ है। भारतीयता ने इस गूढ सत्य को सहज करने के लिए कण-कण में व्याप्त परमेश्वर को किसी एक प्रतीक के रूप में मानकर उसके निमित्त पुरुषार्थ का निर्देश दिया है। भांति-भांति के दर्शनों में भांति-भांति के प्रतीक माने गए, गढ़े गए लेकिन पूज्य तनसिंह जी ने उस परमेश्वर के दर्शन समाज में किए। उन्होंने समाज को उस अमूर्त परमेश्वर का मूर्तिमान स्वरूप मानकर उसकी वंदना को ही परमेश्वर की वंदना मानने का दर्शन हम सबके सम्मुख प्रस्तुत किया एवं स्वयं अपना उदाहरण हम सबके समक्ष पेश कर अनुकरण करने का आग्रह किया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'एक भिखारी की आत्मकथा' में समाज को स्वयं के भूले भटके सपनों का प्रकाश स्तंभ, उपेक्षित एवं सार रहित जीवन की आशापूर्ण मंजिल, जीवन का धन आदि बताया है। उन्होंने लिखा कि तेरा सम्मान ही मेरी लज्जा है, तेरा गुणगान ही मेरा अनुपम पेय, तेरी व्यथा ही मेरी आंखों के बहुमूल्य आंसू, तेरा गौरवपूर्ण इतिहास ही जीवन की खुराक है। आगे वे लिखते हैं कि तुम समुद्र और मैं तुम्हारी ओर उछलता आने वाला एक नाला हूं, तुम मेरे सर्वस्व हो और मैं तुम्हारे चरणों की कृपा का निष्काम उपासक हूं। इस विश्लेषण को पढ़कर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि पूज्य तनसिंह जी की नजरों में परमेश्वर का स्वरूप क्या था? ऐसे में यदि हम उनके अनुयायी बनना चाहते हैं तो हमारा परमेश्वर यह समाज है। हमारा पुरुष हमारा यह समाज है और उसके लिए की जाने वाली हलचल ही पुरुषार्थ हैं। पूज्य श्री ने इसी पुस्तक के इसी अध्याय में आगे लिखा कि 'मेरे समाज। तुम्हारी चरण वंदना कर मैं तुम पर कोई उपकार नहीं कर रहा हूं- मैं तो कृतार्थ होना चाहता हूं। मेरा विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी, कुटुम्ब पालन और जीवन के समस्त व्यापार केवल इसी लक्ष्य से प्रेरित हैं।' यही पुरुषार्थ है। हमारे शास्त्रों में पुरुषार्थ को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में विभाजित किया है। यदि हम पूज्य तनसिंह जी के अनुयायी हैं, उनके मार्ग के राही हैं तो इस समाज की चरण वंदना ही हमारा धर्म नामक पुरुषार्थ है। हमारे अथोपार्जन का हेतु यदि हमारा यह महान समाज बन जाता है तो हम अर्थ नामक पुरूषार्थ से परिपूर्ण हो जाएंगे। यदि हमारी समस्त कामनाएं हमारे इस आराध्य समाज की कामनाओं में विलय हो जावें तो हम काम नामक पुरूषार्थ की ओर बढ़ेंगे और यदि हम ऐसा कर लेंगे तो मोक्ष नामक पुरूषार्थ, जिसमें कुछ करना नहीं होता बल्कि इससे पूर्व के तीनों के सही दिशा में प्रवाहित होने पर जो स्वतः घटित होता है, हमारे जीवन में घटित हो जाएगा। इसलिए यदि हमें पुरूषार्थी बनना है तो हमारी हलचलों का स्वामी हमारा यह महान समाज परमेश्वर रूप में बन जावे। ऐसा होने पर हमारी हर हलचल में हमारा क्षात्र भाव प्रकट होने लगेगा। हमारी हर हलचल की प्रेरणा हमारा क्षात्र भाव हो जाएगा और यही क्षात्र पुरूषार्थ है। हमारे महान पूर्वजों ने इसी पुरूषार्थ के सहारे पुरुष की तरफ कदम बढ़ाए और आमजन में परमेश्वर के समान पूजनीय स्थान पाया। इसलिए आईए यदि वास्तव में पुरूषार्थी बनना है तो पूज्य तनसिंह जी की शरण में चलें, उनके द्वारा प्रतिपादित राजपथ पर सायास कदम रखें और अनायास ही मंजिल की ओर प्रवाहमान होवें।

खरी-खरी

अधिकारों का संघर्ष और सामाजिक संगठन

अधिकारों का संघर्ष और संगठन एक-दूसरे के पर्याय बने हुए हैं। प्रायः माना ही यह जाता है कि संगठन बनाए ही इसीलिए जाते हैं कि अधिकारों के लिए संघर्ष करना है। प्रायः संगठनों की घोषणा ही यही होती है कि वे अपने समाज के लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक कर रहे हैं। इस प्रकार पूरे ताने-बाने को देखकर यही लगता है कि संगठन का अर्थ है अधिकारों के लिए संघर्ष। इसी संघर्ष का परिणाम है कि संगठन किसी एक वर्ग को संगठित कर उससे बड़ी इकाई में विघटन पैदा करते हैं। यूं तो संगठन और विघटन दोनों विलोमार्थक शब्द हैं लेकिन उपरोक्त प्रक्रिया को समझें तो लगता है कि संगठन विघटन के पूरक बनते जा रहे हैं। गांव के लिए बना संगठन अन्य गांव के संगठन से संघर्ष कर रहा है, एक जाति के लिए बना संगठन अन्य जाति के संगठन से संघर्ष कर रहा है, एक पंथ का संगठन अन्य पंथ के संगठन से संघर्षरत है तो देश संगठित होकर अन्य देश से संघर्ष को उद्यत है। कुल मिलाकर संगठन जो योग को प्रतीक होने चाहिए, विलय का प्रतीक होने चाहिए वे वियोग घटित करवा रहे हैं, विघटन पैदा कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में गहराई से अध्ययन करें तो पाएंगे कि बाहर से भले ही संगठन विघटन का कारण नजर आए लेकिन वास्तव में कारण संगठन नहीं है। वास्तविक कारण तो अधिकारों के लिए संघर्ष का आह्वान है। अधिकारों की जागरूकता के साथ-साथ कर्तव्य के प्रति जागरुकता की भी बात हो तो शायद संगठन विघटन का कारण नहीं बनते लेकिन ऐसा है नहीं और ऐसा नहीं है इसीलिए संगठनों के नाम पर अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले गुट बनते जा रहे हैं। ऐसे गुट जिनके अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु गठित होते हैं, कभी-कभी उनसे ही संघर्ष कर लेते हैं या फिर उन गुटों में ही संघर्ष पनपा लेते हैं क्यों कि अधिकार प्राप्ति का संघर्ष उन्हें अन्य को जागरुक करते-करते स्वयं को भी अति जागरुक कर देता है और जो प्राप्ति के लिए जागरुक होता है वह दे नहीं सकता और जो दे नहीं सकता है वह लेने के लिए लड़ने लगता है। आज पूरा संसार इसी लेने के संघर्ष में संघर्षरत है। संगठन भी इसी लेने के संघर्ष के प्रतीक हो गए हैं इसलिए उन्हें भी अधिकारों के संघर्ष का प्रतीक माना जाने लगा है। लेकिन इस संघर्ष का प्रारंभ आज हुआ हो ऐसा नहीं है। दुनिया की अर्ध सभ्य सभ्यताओं में इस लेने के संघर्ष को ही वास्तविक संघर्ष माना गया। सृष्टि के द्वंद्वात्मक स्वभाव के कारण सृष्टि में संघर्ष स्वाभाविक है लेकिन भारतीय परंपरा में यह संघर्ष अधिकारों का संघर्ष नहीं था बल्कि सत और तम का संघर्ष था, अच्छे और बूरे का संघर्ष था, न्याय और अन्याय का संघर्ष था, देवों और दानवों का संघर्ष था, राम और रावण का संघर्ष था, कृष्ण और कंस का संघर्ष था या कौरवों और पांडवों का संघर्ष था। अनेक लोग महाभारत को अधिकारों के संघर्ष के रूप में परिभाषित करते हैं तो विचार करें क्या युधिष्ठर जैसा श्रेष्ठ पुरुष किसी अधिकार के लिए संघर्ष में प्रवृत्त हो सकता है? अधिकारों का संघर्ष होता तो अर्जुन युद्ध से पहले ही भीख मांगकर जीवन यापन करने के तैयार थे फिर भगवान उन्हें युद्ध में प्रवृत्त क्यों करते? यदि अधिकारों का संघर्ष होता तो क्या भगवान कृष्ण उस युद्ध का केन्द्र बिन्दु बनते जिन्होंने अपने पूरे जीवन में स्वयं के लिए कुछ भी हासिल नहीं किया और आर्त की पुकार के लिए संपूर्ण भारत में गतिशील रहे। तो वास्तव में महाभारत का युद्ध सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय का ही संघर्ष था और यही भारतीयता है। भारत सृष्टि की इसी द्वंद्वात्मकता को स्वीकार करता है इसीलिए भारत में सहस्त्राब्दियों तक सभी समाज आदर्श सद्भाव के साथ संयोजित रहे। लेकिन पश्चिम की अर्द्ध विकसित संस्कृतियों के संपर्क के कारण भारत की यह आदर्श द्वंद्वात्मकता प्रभावित हुई और अधिकारों के लिए संघर्ष का प्रादुर्भाव हुआ। प्राप्ति का संघर्ष भारत की देन नहीं है बल्कि भारत में आई विजातिय संस्कृतियों के कारण भारतीयता में पनपे विचलन की देन है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	18.05.2019 से 28.05.2019 तक	**लिटिल एंजल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल। कल्याणनगर, गनोड़ा (लांबापारड़ा) जिला-बांसवाड़ा।** शिविर स्थल उदयपुर रतलाम मार्ग पर उदयपुर से 125 किमी व रतलाम से 120 किमी दूर है। बांसवाड़ा से 35 किमी दूर है। गनोड़ा (लांबापारड़ा) के लिए जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, अहमदाबाद से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। रेल सेवा के लिए उदयपुर या रतलाम रेलवे स्टेशन उतरें, वहां से बसें उपलब्ध हैं। शिविर स्थल गनोड़ा बस स्टैण्ड से 1 किमी दूर स्थित है। 18 मार्च को अपराह्न 12 बजे तक पहुंचना है। इस शिविर में 10वीं की परीक्षा दे चुके एवं 1 माप्रशि व 2 प्राप्रशि कर चुके शिविरार्थी ही शामिल हो सकेंगे। नीचे नोट में वर्णित गणवेश व सामग्री अनिवार्य रूप से लानी है। संघ साहित्य की झनकार, निर्देशिका एवं मेरी साधना पुस्तकें साथ लावें। **सम्पर्क सूत्र :** 94145-66796, 99835-65520, 95879-68610
2.	मा.प्र.शि. (बालिका)	31.05.2019 से 06.06.2019 तक	**जयमल कोट, पुष्कर (अजमेर)।** कम से कम 8वीं पास और पूर्व में शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकती हैं। गणवेश लेकर आएं।
3.	मिलन शिविर	07.06.2019 से 10.06.2019 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। ● आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। ● आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

बिम्बिसार के बाद मगध का शासक अजातशत्रु बना, जिसे जैन ग्रन्थों में 'कुणिक' नाम से संबोधित किया गया है। अजात शत्रु 490 ई. पू. के आसपास मगध का शासक बना। शासक बनते ही उसे कौशल नरेश प्रसेनजित के विरोध का सामना करना पड़ा। प्रसेनजित द्वारा काशी प्रदेश पर अधिकार कर लिया गया, यही कौशल और मगध के मध्य संघर्ष प्रारम्भ होने का कारण सिद्ध हुआ। जैन ग्रन्थों में मगध और कौशल के मध्य दो युद्धों का वर्णन मिलता है। प्रथम युद्ध में प्रसेनजित को पराजय का सामना करना पड़ा और उसने युद्ध क्षेत्र से भाग कर श्रावस्ती नगर में शरण ली। किन्तु शीघ्र ही प्रसेनजित ने पुनः अपनी शक्ति संगठित कर अजातशत्रु पर उस समय आक्रमण किया जब वह वज्जिसंघ की ओर उलझा हुआ था। इस बार युद्ध में अजातशत्रु की पराजय हुई और उसे बन्दी बना लिया गया। तत्कालीन समय में अवन्ति राज्य भी एक शक्तिशाली राज्य था, अवन्ति के भय से प्रसेनजित ने अजातशत्रु संग संधि कर ली और उसे कारागृह से मुक्त कर अपनी पुत्री वज्जिरा का विवाह उसके साथ कर काशी का प्रदेश पुनः मगध को दे दिया। कौशल से वैवाहिक संबंध स्थापित हो जाने के बाद अजातशत्रु ने वज्जिसंघ की ओर ध्यान दिया। वज्जिसंघ से संघर्ष के दो मुख्य कारण थे पहला उस समय तक गंगानदी पूर्वी भारत में व्यापार का मुख्य माध्यम बन चुकी थी जिस पर मगध और वज्जि संघ दोनों ही अपना नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे, दूसरा गंगा नदी के किनारे एक रत्नों की खान थी जिस पर मगध और वज्जिसंघ के मध्य आधा-आधा भाग लेने का समझौता हुआ था लेकिन वज्जिसंघ ने उस पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया था। वज्जि संघ के लिच्छवियों की शक्ति और प्रतिष्ठा काफी बढ़ी हुई थी। वज्जिसंघ में गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी और चेतक उसका प्रधान था, वज्जिसंघ का संगठनात्मक ढांचा बहुत मजबूत था उन्हें प्रत्यक्ष संघर्ष में परास्त करना अत्यधिक मुश्किल कार्य था। अजातशत्रु ने कुटनीति से काम लिया। इस बारे में अजातशत्रु ने बुद्ध से सम्पर्क किया तब बुद्ध ने अजातशत्रु को बताया कि वज्जिसंघ का विनाश भेद द्वारा ही संभव है। अजातशत्रु ने अपने विश्वासपात्र सुनीथ और वस्सकार नामक दो मंत्रियों को छद्म रूप में वज्जि संघ में भेजा। तीन वर्षों के लगातार प्रयत्न के बाद ये दोनों मंत्री अपने उद्देश्य में सफल रहे और वज्जिसंघ (लिच्छवियों) में फूट पड़ गई। भेद नीति के कारण वज्जिसंघ की शक्ति क्षीण हो गई थी। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
01-04-2019 प्रकाशक

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

हृदय - (दो)

श्री परमहंस आश्रम शक्तेगढ़ की सायंकालीन सभा में भक्तों की जिज्ञासा पर कि, शरीर का वह कौन-सा अंग है जिसे हृदय कहते हैं, जिस हृदय में भगवान् का निवास होता है ? - दिनांक 5 जून, सन् 2009 को पूज्य महाराजश्री का प्रवचन :

रावण की भर्त्सना करते हुए गोस्वामी जी लिखते हैं -

फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरुख हृदयं न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम।।
(मानस, 6/16 ख)

मूर्ख के हृदय में ज्ञान का उदय नहीं होता। एक अन्य प्रसंग लें। भगवान् पंचवटी में थे। सीताहरण हो चुका था। राम और लक्ष्मण उनकी शोध में थे। भोलेनाथ शिव उधर से निकले।

हृदयं बिचारत जात हर, केहि बिधि दरसनु होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु, गएं जान सबु कोइ।।
(मानस, 1/48 क)

शंकर जी हृदय में विचार करते चले जा रहे हैं। अर्थात् हृदय ऐसी स्थली है जिसमें विचार-मंथन चलता रहता है। गुरु-वन्दना प्रकरण में है -

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियं होती।।
(मानस, 1/5/5)

गुरु महाराज के चरण-नख की ज्योति मणि-माणिक्य के तुल्य है। इन चरण-नखों का स्मरण करने से हृदय में दिव्य-दृष्टि का सञ्चार हो जाता है। भगवान् शिव की मान्यता देखें-

जाके हृदयं भगति जसि प्रीती।
प्रभु तहं प्रगट सदा तेहिं रीती।।
(मानस, 1/84/3)

जिसके हृदय में जैसी भक्ति और प्रीति होती है, प्रभु उसके लिए उसी रीति से प्रकट होते हैं। अर्थात् हृदय में भक्ति और प्रीति का भी निवास होता है।

गुरु वशिष्ठ जी ने राम से कहा -
सब के उर अंतर बसहु, जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन जननी भरत हित, होइ सो कहिअ उपाउ।।
(मानस, 2/257)

आप सबके हृदय में निवास करते हैं। किसके हृदय में कैसा भाव है, आपको विदित है। अर्थात् हृदय ऐसा स्थल है जहां भाव-कुभाव भी रहता है। महर्षि वाल्मीकि ने भगवान् का निवास-स्थल 'मानस' में इस प्रकार बताया-

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।।
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे।
तिन्ह के हिय तुम्ह कहुं गृह रूरे।।
(मानस, 2/127/4-5)

जिनके कान समुद्र की भांति आपकी मनोरम कथारूपी नदियों से निरन्तर भरते हुए भी कभी तृप्त नहीं होते, उनका हृदय आपके लिए सुन्दर घर है।

विभीषण जी जब शरण में आए, भगवान् ने कहा -

कहु लंकेस सहित परिवारा।
कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।।
(मानस, 5/45/4)

हे लंकेश। परिवार सहित अपनी कुशल तो कहो। आपका निवास बुरी जगह है।

खल मण्डली बसहु दिनु राती।
सखा धरम निबहइ केहि भांति।।
(मानस, 5/45/5)

दिन-रात आप दुष्टों की मण्डली में रहते हैं, धर्म का निर्वाह कैसे होता है? विभीषण ने कहा -

तब लगि कुसल न जीव कहुं, सपनेहुं मन बिश्राम।
जब लगि भजन न राम कहूं, सोक धाम तजि काम।।
(मानस, 5/46)

प्रभो! जीव-मात्र के लिए सृष्टि में कहीं कुशल है ही नहीं, जब तक वह शोकधाम काम का त्याग करके आपका भजन नहीं करता। जब तक वह भजन नहीं करता, तब तक हृदय में क्या होता है?-

तब लगि हृदयं बसत खल नाना।
लोभ मोह मच्छर मद माना।।
(मानस, 5/46/1)
ममता तरुन तमी अंधिआरी।
राग द्वेष उलूक सुखकारी।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं।
जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं।।
(मानस, 5/46/3-4)

इस प्रकार हृदय में भगवान् ही नहीं रहते, खल भी वहीं निवास करते हैं। अतः विचारणीय है कि हृदय क्या है?

उत्तरकाण्ड के ज्ञानदीप प्रकरण में है :
जीव हृदयं तम मोह बिसेषी।
ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी।।
(मानस, 7/116/7)

जीव के हृदय में तम विशेष है। अंधेरे में अविद्या की ग्रन्थि दिखाई नहीं देती तो भला छूटेगी कैसे?

नन्दिग्राम में भरत जी की रहनी देखें -
नित पूजन प्रभु पांवरी, प्रीति न हृदयं समाति।।
(मानस, 2/325)

भगवान् के प्रति उनका इतना अगाध प्रेम था कि हृदय छोटा पड़ गया। सुतीक्ष्ण प्रसंग में है :

अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा।
प्रगटे हृदयं हरन भव भीरा।।
(मानस, 3/9/14)

मुनि का अतिशय प्रेम देखकर भगवान् उनके हृदय में प्रकट हो गए।

विभीषण की शरणागति पर, सुग्रीव के परामर्श पर उन्हें सान्त्वना देते हुए भगवान् ने कहा- **'जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई।।' (मानस, 5/43/4)** यदि रावण का भाई दुष्ट-हृदय होता तो क्या मेरे समक्ष आ पाता? अर्थात् हृदय में दुष्टता भी होती है।

सुन्दरकाण्ड के आरम्भ में ही है -

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए
(मानस, 5/1/1)

वे उपदेश हनुमान जी को बहुत प्यारे लगे। अर्थात् हृदय उपदेशों को भी ग्रहण करता है। लंका की संरक्षिका लंकिनी ने हनुमान को परामर्श दिया -

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा।
हृदयं राखि कोसलपुर राजा।।
(मानस, 5/4/1)

हृदय में कोशलपुर नरेश का स्वरूप धारण कर लंका में प्रवेश कर सब कार्य करें। हनुमान ने लंका में सीता के दर्शन किया-

कृस तनु सीस जटा एक बेनी।
जपति हृदय रघुपति गुण श्रेनी।।
(मानस, 5/7/8)

हनुमान ने उन्हें सांत्वना दिया-

कह कपि हृदय धीर धरु माता।
सुमिरू राम सेवक सुखदाता।।
(मानस, 5/14/9)

(क्रमशः)

मदनी गांव में होली स्नेहमिलन

सीकर जिले में पलसाना के निकट मदनी गांव स्थित जमवाय माता मंदिर में समाज का होली स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आसपास के समाज बंधु उपस्थित हुए। स्नेहमिलन को पलसाना मंडी के पूर्व अध्यक्ष प्रभुसिंह गोगावास, जितेन्द्रसिंह कारंगा, दिलीपसिंह मदनी, कैप्टन सांवतसिंह, मूलसिंह बरसिंहपुरा, दिलीपसिंह शेखावत, गोविंदसिंह तंवर आदि ने संबोधित किया। स्नेहमिलन में 30 प्रतिभावान विद्यार्थियों, सरकारी सेवा में चयनित युवाओं एवं समाज सेवकों को सम्मानित किया गया।

भरतपालसिंह अध्यक्ष निर्वाचित

भरतपालसिंह नांगल राजस्थान के जवाहर नवोदय विद्यालयों के पूर्व छात्रों के राज्य स्तरीय संगठन नवोदय एल्यूमनी संगठन (ऊर्जा) के अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। 1987 से राजस्थान के विभिन्न जिलों में स्थापित जवाहर नवोदय विद्यालयों से निकले हजारों छात्र इस एल्यूमनी के सदस्य हैं। 17 मार्च को जयपुर में हुए चुनाव में प्रत्येक विद्यालय की एल्यूमनी से पांच प्रतिनिधि छात्रों के द्वारा किए गए मतदान में भरतपाल सिंह एवं उनका पैनल विजयी घोषित किया गया। भरतपाल सिंह राजस्थान लोकसेवा आयोग के पूर्व सदस्य शिवपालसिंह नांगल के पुत्र हैं।

सौराष्ट्र संभाग में शाखा भ्रमण

गुजरात के सौराष्ट्र संभाग की विभिन्न शाखाओं के शाखा प्रमुखों, शिक्षण प्रमुखों, विस्तार प्रमुखों व स्वयंसेवकों का एक दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में 17 मार्च को वीर राणजी गोहिल का किला राणपुर में रखा गया। सभी प्रांत प्रमुखों एवं शाखा प्रमुखों ने अपनी-अपनी शाखाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर बालक एवं बालिका हेतु चर्चा की गई एवं संभावित शिविरार्थियों की सूची बनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने किले का इतिहास बताते हुए कहा कि शाखा संघ का प्राण, शिविर शरीर एवं शेष कार्यक्रम शृंगार हैं। जैसे प्राण बिना शरीर और शृंगार बेमानी है वैसे ही शाखा बिना संघ संभव नहीं है। कार्यक्रम में संभाग के सभी प्रांतों, मंडलों और शाखाओं से महिला व पुरुष शामिल हुए। सभी अपने साथ भोजन लेकर आए थे जिसका सामूहिक रूप से सेवन किया।

राष्ट्रीय खेल पुरस्कार विजेता

कर्नल हिम्मतसिंह पीह

राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार :

हमारे देश में खेल के क्षेत्र में सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिया जाने वाला सबसे बड़ा पुरस्कार है। इसी स्थापना सन् 1991 में की गई थी। इस पुरस्कार में एक पदक, प्रशस्ति पत्र और 7.5 लाख रुपए की राशि प्रदान की जाती है। सम्मानित व्यक्तियों को रेल्वे की मुफ्त पास सुविधा प्रदान की जाती है जिसके तहत पुरस्कार विजेता राजधानी या शताब्दी गाड़ियों में भी प्रथम श्रेणी वातानुकूलित कोच में मुफ्त यात्रा कर सकते हैं।

हमारे समाज की निम्न प्रतिभाओं को इस सम्मान से नवाजा जा चुका है :

ले. कर्नल महेन्द्रसिंह धोनी	क्रिकेट	2007
कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़	शूटिंग	2014

अर्जुन पुरस्कार

यह भारत का दूसरा सर्वोच्च खेल पुरस्कार है। यह चार वर्षों तक लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार स्वरुप पांच लाख रुपए की राशि, अर्जुन की कांस्य प्रतिभा और एक प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

हमारे समाज के निम्न खिलाड़ियों को यह पुरस्कार पाने का गौरव प्राप्त हो चुका है :

नाम	खेल	वर्ष
विजय सिंह चौहान	एथेलेटिक्स	1972
श्रीराम सिंह	एथेलेटिक्स	1973
शिवनाथसिंह	एथेलेटिक्स	1974
सुमन रावत	एथेलेटिक्स	1986
शक्तिसिंह	एथेलेटिक्स	1995
सुधासिंह	एथेलेटिक्स	2012
वरूण भाटी	एथेलेटिक्स	2017
मधुमिता बिष्ट	बैडमिण्टन	1982
हनुमानसिंह	बॉस्केटबॉल	1975
प्रशान्ती सिंह	बॉस्केटबॉल	2017
परिमार्जन नेगी	शतरंज	2010
चेतन चौहान	क्रिकेट	1981
अजय जड़ेजा	क्रिकेट	1997
रघुबीरसिंह	घुड़सवारी	1982
सीपी सिंह	फुटबॉल	1971
मगनसिंह	फुटबॉल	1973
लक्ष्मणसिंह	गोल्फ	1982
अशोक कुमार	हॉकी	1974
देवेश चौहान	हॉकी	2003
दीपक ठाकुर	हॉकी	2004
नरेन्द्रसिंह	जूडो	1999
यशपाल सोलंकी	जूडो	2012
कर्नल प्रेमसिंह	पोलो	1961
मेजर ठा. किशनसिंह	पोलो	1963
हणुतसिंह	पोलो	1964
मेजर वीपी सिंह	पोलो	1975
कर्नल रवि राठौड़	पोलो	2018
महाराजा करणीसिंह	शूटिंग	1961
राज्यश्री कुमारी	शूटिंग	1968
भुवनेश्वरी कुमारी	शूटिंग	1964
भीमसिंह (द्वितीय)	शूटिंग	1971
एस.पी. चौहान	शूटिंग	1981
जसपाल राणा	शूटिंग	1994
शिल्पीसिंह	शूटिंग	1997
कर्नल राज्यवर्धनसिंह राठौड़	शूटिंग	2003
संजीव राजपूत	शूटिंग	2010
तेजस्विनी सांवत	शूटिंग	2011
अनुराजसिंह	शूटिंग	2012
ओमकार सिंह	शूटिंग	2012
राजकुमारी राठौड़	शूटिंग	2013
अपूर्वी चन्देला	शूटिंग	2016
श्रेयशी सिंह	शूटिंग	2018
भंवरसिंह	तैराकी	1971
एम.एस. राणा	तैराकी	1975
सुखपालसिंह	वॉलीबाल	1999
भीमसिंह भाटी	वॉलीबाल	1966
अल्का तोमर	वॉलीबाल	2008
राजीव तोमर	वॉलीबाल	2010
सुनील कुमार राणा	वॉलीबाल	2014
रोशन बोपन्ना	टेनिस	2018

द्रौणाचार्य पुरस्कार

यह पुरस्कार खिलाड़ियों और टीमों को प्रशिक्षण प्रदान करने में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जाने माने खेल प्रशिक्षकों (कोच) को दिया जाता है। इसकी स्थापना 1985 में की गई थी। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रतिमा, प्रमाण-पत्र, पारंपरिक पोशाक और पांच लाख रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाता है। हर वर्ष अधिकतम 5 प्रशिक्षकों को सम्मानित किया जाता है।

हमारे समाज से अब तक सम्मानित किए गए प्रशिक्षकों के नाम इस प्रकार है :

नाम	खेल	वर्ष
करणसिंह	एथेलेटिक्स	1995
बहादुरसिंह चौहान	एथेलेटिक्स	1998
जसवंतसिंह	एथेलेटिक्स	2002
आर.डी.सिंह	एथेलेटिक्स	2006
नवलसिंह	एथेलेटिक्स	2015
जगदीश सिंह	बॉक्सिंग	2007
जयदेवसिंह बिष्ट	बॉक्सिंग	2009
महावीर सिंह	बॉक्सिंग	2013
एस.के. सिंह	आर्चरी	2007
स्वतंत्र राज सिंह	बॉक्सिंग	2015
देवेन्द्र कुमार राठौड़	जिम्नास्टिक	2011
यशवीर सिंह	कुश्ती	2012
राजसिंह	कुश्ती	2013
अनूपसिंह	कुश्ती	2015

दुःखद अवसान

रघुनाथसिंह मवड़ी

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **रघुनाथसिंह मवड़ी** का 25 मार्च को देहावसान हो गया। वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक के पद से सेवानिवृत श्री मवड़ी मई 1957 में उच्च प्रशिक्षण शिविर मेड़ता में संघ के सम्पर्क में आए। उन्होंने अपने जीवन में 7 उ.प्र.शि., 6 मा.प्र.शि. व 12 प्रा.प्र.शि. किए। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से उनको अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

(पृष्ठ दो का शेष)

प्रथम विश्वयुद्ध...

प्रथम विश्व युद्ध में लड़ते हुए रात में, दिन में, पानी में, खड़े रहकर, खन्दकों में युद्ध के मोर्चों पर जहां भी समय मिला डायरी लिखते गए। इस भारतीय सेना नायक ने संभवतः दुनिया की सबसे बड़ी युद्ध डायरी लिखी है। जनरल अमरसिंह द्वारा निर्मित कानोता ठिकाने का गढ़ एवं जयपुर की उनकी हवेली नारायण निवास पैलेस स्थापत्य कला का बैजोड़ नमूना है। उनकी डायरी के प्रमुख अंक राजस्थान पत्रिका में एक कॉलम में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम विश्व युद्ध के वर्णन को लिखने में जनरल साहब को विंस्टन चर्चिल एवं विल्फ्रेड ओवेन से भी बड़े लेखक रूप में विश्व प्रसिद्धि मिली जहां उन्होंने इस युद्ध का 'लाइव' वर्णन किया है।

अधिकारों... (पेज चार)

इसी विचलन के कारण भारतीयता का क्षरण हुआ। आजादी के समय तथाकथित शोषक लोगों से संघर्ष के लिए अधिकारों की जागरुकता के नाम पर अधिकारों के संघर्ष का पोषण किया गया और वही पोषण आज भारतीयता पर गंभीर चोट करते हुए पूरे वातावरण में अधिकारों का संघर्ष प्रतिपादित कर चुका है और उसी का परिणाम है कि संगठन का पर्याय भी अधिकारों का संघर्ष हो गया है। शक्तिशाली होने का अर्थ ही प्राप्तियों के लिए पात्र होना हो गया है और शक्तिशाली बनने के लिए संगठन को एक मात्र उपाय मान लिया गया है। इस प्रकार विभिन्न जातीय संगठन, राजनीतिक संगठन, पंथों के संगठन, प्रदेशों के संगठन केवल और केवल अधिकारों की बात करते हैं और पूरे संसार को एक ऐसे संघर्ष में प्रवृत कर रहे हैं जिसका कोई अंत नहीं है। जबकि भारतीयता कभी भी ऐसे संघर्ष की पोषक नहीं रही है। भारतीयता तो कर्तव्य की बात करती है इसीलिए तो भारतीयता का आदर्श राम हैं, भरत हैं, भगवान कृष्ण हैं, हनुमान हैं, महावीर हैं, बुद्ध हैं, दुर्गादास हैं। भारतीयता ऐसे व्यक्तित्व में अपना नायकत्व खोजती है जिसने लिया नहीं, दिया है। देने वाला भारत में हमेशा पूजा गया है। आज अधिकारों का संघर्ष करने वाले व्यक्तियों को राजनीतिक मजबूरियों के तहत भगवान भले ही बताया जा रहा हो लेकिन सामान्य भारतीय जनमानस तो उसे ही स्वीकारता है जो देता है या जिसने दिया है या जिसने देना सिखाया है। भले ही आम भारतीय वातावरण के दबाव में उनके जैसा आचरण नहीं कर पाता हो लेकिन उसके लिए पूजनीय तो वही व्यक्तित्व बनता है जो देता है। लेकिन इसमें भी कोई दो राय नहीं कि यह भारत का दुर्भाग्य है कि संगठन का पर्याय संघर्ष बन गया है और इसीलिए संगठन तमोगुणी विघटन का कारण बनते जा रहे हैं। सभी संविधान प्रदत्त अधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन उसी संविधान में वर्णित मूलभूत कर्तव्य उपेक्षा की छांव में दबे पड़े हैं। यदि हमें आदर्श संगठन बनाना है, संगठन को विघटन का कारण नहीं बनने देना है तो लेने की नहीं देने की बात प्रारम्भ करें। पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त मार्ग इसीलिए अधिकार की नहीं दायित्व की बात करता है।

अजातशत्रु... (पेज सात)

अतः अजातशत्रु के आक्रमण का वो सामना नहीं कर पाए और पराजित हो गए। वैशाली को मगध साम्राज्य में मिला लिया गया। अब मगध और अवन्ति में साम्राज्य विस्तार के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। परन्तु वत्सराज उदयन की मध्यस्था में दोनों राज्यों में सुलह हो गई। अजातशत्रु धार्मिक मामलों में अपने पिता की तरह ही उदार था तथा तत्कालीन सभी धर्मों का आदर करता था। प्रारम्भ में उसका झुकाव जैन धर्म की ओर था परन्तु कालान्तर में वह बुद्ध का अनुयायी बन गया। अजात शत्रु के शासन काल में ही प्रथम बौद्ध संगति का आयोजन राजगृह की सप्तपर्णी गुहा में किया गया जिसकी सारी व्यवस्था अजातशत्रु द्वारा की गई थी। अजात शत्रु एक कुशल सैनिक और विजेता ही नहीं, अपितु एक कुशल शासक भी था, उसने अपने पिता के पद्चिह्नों पर चलकर साम्राज्यवादी नीति को अपना कर मगध का अत्यधिक विस्तार किया और मगध को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया। तीस वर्ष से भी अधिक समय तक शासन करने करने के बाद 459 ई.पू. में अजातशत्रु मृत्यु को प्राप्त हुआ। **(क्रमशः)**

माननीय संघ प्रमुख श्री का बाड़मेर, रामदेवरा व जोधपुर प्रवास

अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत माननीय संघ प्रमुख श्री 16 मार्च से 25 मार्च तक बाड़मेर, रामदेवरा एवं जोधपुर प्रवास पर रहे। 16 मार्च को बाड़मेर पधारे। 17 मार्च को प्रातः भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम द्वारा संचालित आलोक आश्रम में बनने वाले हॉल का शिलान्यास किया। इसी दिन श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन की बाड़मेर टीम ने माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य पाया। 18 मार्च को आश्रम में ही विश्राम किया। 19 मार्च को बाड़मेर शहर के अनेक लोग माननीय संघ प्रमुख श्री मिलने पहुंचे। 19 की शाम को पूर्व सांसद मानवेन्द्र सिंह जसोल माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने आश्रम आए एवं सामाजिक व राजनीतिक चर्चा की। 20 मार्च को स्थानीय स्वयंसेवकों एवं उनके परिवारों के साथ आश्रम में हुए होलिका दहन में शामिल हुए। 21 मार्च को सुबह धुलंडी के दिन सभी स्वयंसेवकों ने संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में होली खेली। 21 की शाम को ही बाड़मेर के निकट स्थित स्वामी अड़गडानंद जी के आश्रम पधार कर संतों से चर्चा की। 22 को आश्रम में ही विश्राम किया। 23 को बाड़मेर से रवाना होकर रामदेवरा पहुंचे एवं लोकदेवता रामदेव जी के मंदिर दर्शन किए। यहां जोधपुर संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक द्वारा संचालित पंचवटी छात्रावास के पूर्व छात्रों के स्नेहमिलन को संबोधित किया। पोकरण संभाग के संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय एवं उनके साथी स्वयंसेवकों ने यहां माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य हासिल किया। 24 मार्च को प्रातः स्थानीय समाज बंधुओं से रामदेवरा में राजपूत धर्मशाला के निर्माण को लेकर चर्चा की। वहां से देचु पधारे जहां स्थानीय समाज बंधुओं से चर्चा की। देचु से चोरड़िया पधारे जहां स्थानीय स्वयंसेवक सुमेरसिंह चोरड़िया के आवास पर समाज बंधुओं से भेंट की। यहां शेरगढ़ विधायक मीना कंवर के परिवार के लोगों ने भी माननीय संघ प्रमुख से भेंट की। चोरड़िया से बालेसर पधारे जहां आयोजित होली स्नेहमिलन में समाज बंधुओं से सामाजिक व आध्यात्मिक चर्चा की। यहां स्वामी जी द्वारा उद्घाटित यथार्थ गीता लोगों को भेंट की। बालेसर से जोधपुर पधारे, होली स्नेह मिलन में शामिल हुए। जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय में रात्रि विश्राम किया। 25 मार्च को प्रातः रेल द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

पंचवटी छात्रावास का पूर्व छात्र मिलन

संघ के जोधपुर संभाग के पंचवटी संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक द्वारा विगत 16 वर्षों से संचालित छात्रावास के पूर्व छात्रों का दो दिवसीय स्नेहमिलन 23 व 24 मार्च को रामदेवरा में संपन्न हुआ। इस छात्रावास में प्रारम्भ से ही संघ की शाखा लगती रही है एवं छात्रावास में रहने वाले छात्रों ने अनेक शिविर किए हैं। माननीय संघ प्रमुख श्री भी कई बार छात्रावास में पधार चुके हैं। इसलिए सभी पूर्व छात्रों का आग्रह था कि माननीय संघ प्रमुख श्री का भी इस स्नेहमिलन में सानिध्य मिले। इस आग्रह को स्वीकार कर माननीय संघ प्रमुख श्री 23 मार्च की शाम रामदेवरा पहुंचे। पूर्व छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि क्षात्र धर्म किसी जाति, समाज, राष्ट्र की सीमा में आबद्ध नहीं है। हमारे पूर्वजों ने तो मनुष्येत्तर प्राणियों की रक्षार्थ भी अपना जीवन न्यौछावर किया है। हमें श्रेष्ठ बनने के लिए अपने पूर्वजों का अनुकरण करना होगा एवं अपने आचरण में पवित्रता लानी होगी। पवित्रता ही श्रेष्ठता का आधार बनती है। 24 मार्च को प्रातः पूर्व छात्रों से मिलने केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत पहुंचे। उन्होंने कहा कि समाज चरित्र को ध्यान में रखते हुए हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारम्भ से ही साधना में लगना होगा। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा, पोकरण संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय आदि स्वयंसेवक भी इस स्नेहमिलन में शामिल हुए। विभिन्न कार्यक्रमों में सभी छात्रों ने छात्रावास में बिताए अपने समय को याद किया एवं भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम करते हुए छात्रावास परिवार के पारिवारिक भाव को सुदृढ़ बनाए रखने का संकल्प लिया। सभी ने छात्रावास संचालक चन्द्रवीर सिंह की इस पहल को सराहा।

संगठन के लिए स्वयं का गठन आवश्यक

जिनका स्वयं का गठन नहीं हुआ है वे आज संगठन कर रहे हैं इसीलिए संगठन संभव नहीं हो पा रहे। संगठन के लिए पहले स्वयं का गठन आवश्यक है। ऐसा दर्शन के बिना संभव नहीं है। केवल अध्यक्ष बनने के लिए बनने वाले संगठन वास्तव में संगठन नहीं होते, इसीलिए संघ ऐसे कामों से दूर रहता है। पूज्य तनसिंह जी का लिखा हमने एक गीत अभी गाया, 'मैं बनजारा हूं' तो बनजारा चलता रहता है। इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन मेरे साथ चल रहा है। लोगों को जोड़ने के लिए प्रयास करता है लेकिन उन्हें जोड़ने के लिए स्वयं रुकता नहीं है बल्कि चलता रहता है। अपने विकारों को देखता रहता है और उन्हें दूर करने का प्रयास करता रहता है। संघ का काम ऐसे ही है। इसके साथ भी अनेक लोग आए और आते रहते हैं। कुछ साथ चलते रहते हैं कुछ परिस्थिति वश रुक जाते हैं लेकिन संघ रुकता नहीं है। लोग जुड़ते हैं, बिछुड़ते हैं और फिर जुड़ जाते हैं। संघ चाहता है कि उससे जुड़े किसी भी व्यक्ति का अलगाव न हो, कोई भी अलगाव महसूस न कर इसके लिए नए-नए विकल्प तलाशता रहता है। जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय 'तनायन' में आयोजित होली स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ निरन्तर गतिमान है, विस्तारित हो रहा है इसे देखकर मेरा पूरा विश्वास है कि यह हमारे पैमानों की सीमाओं को पार करेगा। हम अपनी सामाजिक सक्रियता बढ़ाएं, पायोनियर बनें ताकि लोग हमें देखकर अपना मार्ग निश्चित करें। उन्होंने कहा कि संघ लोगों को पुतले नहीं बनाता बल्कि प्रेरणादायी जीवन जीने को तैयार करता है इसीलिए कभी संघ पगडंडी था, आज मार्ग बन रहा है, कल राजमार्ग बनेगा। आगे चलने वालों को सामाजिक एवं पारिवारिक आवश्यकताओं को न्यूनतम करते हुए अपना पूरा समय इसमें लगाना होगा। पायोनियर बनने वाले लोग वैज्ञानिक सोच रखते हैं। वे रूढ़ियों को पकड़े रहकर नष्ट नहीं होते वहीं नवीनता के नाम पर श्रेष्ठ परम्पराओं को भी नहीं त्यागते। जहां भी आवश्यक हो वहां अवश्य लड़े क्योंकि यही क्षात्र भाव है लेकिन लड़ना ही जीवन नहीं है, इस बात को भी समझें। राजपूत कभी संग्रह की नहीं सोचता और यदि सोचता है तो रजपूती का ह्रास होता है जैसा हो रहा है। संघ के अनुसार समाज का काम समाज की आराधना है, यथायोग्य सभी को करनी चाहिए। संघ का उद्घोष है मिट जाए मेरा नाम भले रह जाए यजमानों का। हम अपने लिए इसके अनुरूप चिंतन करें। युधिष्ठर को यक्ष ने पूछा कि मार्ग क्या होता है? युधिष्ठर ने बताया कि जिस पर हमारे पूर्वज गुजरे वहीं मार्ग है। संघ हमारे लिए उसी मार्ग का चयन करता है और उस पर प्रशस्त करता है। इसीलिए संघ आह्वान करता है कि हम अपने पन को भूल गए, कुछ संभव हो तो याद करें। इसी को फलीभूत करने के लिए संघ बिछुड़े हुओं के मेले लगा रहा है। हम इन मेलों में सहभागी बनें। 24 मार्च की शाम को आयोजित स्नेहमिलन में जोधपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों के अतिरिक्त सहयोगी वर्ग भी उपस्थित हुआ।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org